جہیز یا میراث؟

فیصلہ آپ کا!

الحمدُ للہ، والصَّلاۃُ والسَّلامُ علیٰ رسولِ اللہ ﷺ۔

میرے عزیز بھائیو! یہ بات اچھی طرح سمجھ لیجئے کہ اسلام نے میراث کا جو نظام قائم کیا ہے، وہ محض دنیاوی تقسیم نہیں، بلکہ عین رحمت، عدل اور حکمت کا مظہر ہے۔ اکابرِ امت ہمیشہ اس حقیقت پر زور دیتے رہے کہ جہیز کی رسم ظلم ہے اور میراث کا نظام عدل ہے۔

اَللہ تعالیٰ نے اپنے بندوں پر بے شمار نعمتیں نازل فرمائی ہیں، انہی میں سے ایک عظیم نعمت عدل وانصاف پر مبنی میراث کا نظام بھی ہے۔

یہ ایسا نظام ہے جس میں کسی پر زیادتی نہیں اور ہر حق دار کو اس کا حق مل جاتا ہے۔

حضرت مولانا اشرف علی تھانویؒ فرمایا کرتے تھے : "شریعت کے ہر حکم کے پیچھے رحمت کا سمندر چھپا ہوتا ہے۔ آدمی عمل کرے تو خود دیکھ لیتا ہے۔"

اسی طرح جہیز کی رسم ایسی برائی ہے جس نے ہزاروں گھروں کو اجاڑ دیا اور لاکھوں ماں باپ کو قرضوں میں ڈبو دیا۔

جہیز کی قباحت اور ظلم

اکابر فرماتے ہیں کہ جہیز کی رسم محض دکھاوا، تکلّف اور غیر شرعی بوجھ ہے۔ یہ نہ دین ہے، نہ تقویٰ ہے، نہ سنت ہے۔

ایک بزرگ نے فرمایا : "جہیز کی وجہ سے کتنی بیٹیاں گھروں میں بیٹھی رہ گئیں اور کتنے والدین نے عزتیں تک داؤ پر لگا دیں۔"

جہیز میں ریاکاری ہے اور لوگوں کو خوش کرنے کی کوشش ہے۔

جب کہ اللہ تعالیٰ کا حکم یہ ہے کہ حق اللہ کے لیے ہو، نہ کہ مخلوق کے لیے۔

میراث کی برکتیں

میراث کا اصل مقصد عدل ہے۔ ہر رشتے دار کو اس کے حق کے مطابق مال مل جاتا ہے۔ اس میں کسی کا احسان نہیں، بلکہ اللہ کا مقرر کردہ حصہ ہے۔

حضرت مولانا اشرف علی تھانویؒ فرماتے ہیں : "جہاں شریعت کا حکم جاری ہو وہاں برکت اترتی ہے اور جہاں انسان اپنی بنائی ہوئی رسمیں چلائے وہاں محرومی اور بے برکتی ہوتی ہے۔"

میراث میں: بیٹی کو اس کا حصہ ملتا ہے، بہن کا حق محفوظ ہوتا ہے، عورت باعزت بنتی ہے، خاندان میں محبت بڑھتی ہے، دل صاف رہتے ہیں اور رزق میں وسعت آتی ہے۔

جہیز محتاج بناتا ہے، میراث باعزت

جہیز چند برتنوں اور ساز و سامان کا نام ہے، ان چیزوں سے نہ عزت بڑھتی ہے نہ سکون ملتا ہے، جو عورت کے کسی کام نہیں آتا اگر اس کے ساتھ ظلم ہو جائے۔ مگر میراث عورت کے ہاتھ میں اصلی مال دیتی ہے، جو اس کی حفاظت، عزت اور استقلال کا ذریعہ بنتا ہے۔

اکابر فرمایا کرتے تھے: "جو چیز اللہ دے وہ نعمت ہے اور جو چیز لوگ دل آزاری سے لیں وہ وبال ہے۔ جہیز اکثر لڑکیوں کو محتاج اور ان کے گھروں کو مقروض کر دیتا ہے، مگر میراث عورت کو مالی طور پر مضبوط کرتی ہے اور اسے زندگی کے نشیب و فراز میں سہارا دیتی ہے۔"

خاندانوں کی اصلاح میراث سے ہے

جب گھر میں عدل ہوتا ہے وہاں محبت بڑھتی ہے، رشتے مضبوط ہوتے ہیں، ایک دوسرے کا اعتماد بڑھتا ہے، مگر جب جہیز کی بنیاد پر رشتے بنائے جائیں تو ابتدا ہی غلط بنیاد پر ہوتی ہے۔

اکابر کہتے تھے: "جہاں دین کے بجائے رسمیں ہوں وہاں گھر آباد نہیں ہوا کرتے۔ میراث خاندان میں محبت، عدل اور سکون پیدا کرتی ہے اور جہیز حسد، تکبّر، اور بدگمانی پیدا کرتا ہے۔

آخرت کا پہلو

میراث کا حق روکنے میں سخت وعید ہے۔ حدیث میں آتا ہے:

"جس نے کسی کا حق دبایا، قیامت کے دن سات زمینوں کا بوجھ لے کر آئے گا۔"

اس لیے جس نے اپنی بیٹی، بہن، یا ماں کا حصہ نہ دیا وہ گویا اللہ کے حکم کو پسِ پشت ڈالنے والا ہے اور جو شخص اللہ کے حکم کے مطابق میراث دے وہ اللہ کے نزدیک کام یاب ہے، اس کے گھر میں رزق بڑھتا ہے، اولاد میں خیر پیدا ہوتی ہے۔

दहेज या विरासत?

फ़ैसला आपका!

अलहम्दुलिल्लाह, दरूद व सलाम अल्लाह के रसूल सल्ल॰ पर।

मेरे अज़ीज़ भाइयो!

यह बात अच्छी तरह समझ लीजिए कि इस्लाम ने **विरासत** का जो **निज़ाम** उतारा है, वह सिर्फ दुनियावी बाँट-जोख नहीं, बल्कि साफ़ रहमत, इंसाफ़ और हिकमत का नमूना है। उम्मत के अकाबिर हमेशा इस हक़ीक़त पर ज़ोर देते रहे कि **दहेज़ की रस्म ज़ुल्म है**, और **विरासत का निज़ाम इंसाफ़ है**।

अल्लाह तआला ने अपने बन्दों पर बेहिसाब नेमतें उतारी हैं, और उन्हीं नेमतों में से एक बड़ी नेमत **इंसाफ़ पर चलने वाला विरासत का निज़ाम भी है।**

यह ऐसा निज़ाम है जिसमें किसी पर ज़्यादती नहीं होती, और हर हक़दार को उसका हक़ पहुँच जाता है।

हज़रत थानवी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते थे:

“शरीअत के हर हुक्म के पीछे रहमत का समुंदर छुपा होता है। इंसान अमल करे तो खुद देख लेता है।”

इसी तरह **दहेज की रस्म** ऐसी बुराई है जिसने हज़ारों घर उजाड़ दिए, और लाखों माँ-बाप को कर्ज़ में डुबो दिया।

दहेज की बुराई और ज़ुल्म

अकाबिर फ़रमाते हैं कि दहेज की रस्म सिर्फ दिखावा, तकल्लुफ और गैर-शरीअती बोझ है। न यह दीन है, न तक़्वा है, न सुन्नत है।

एक बुज़ुर्ग ने फ़रमाया: “दहेज की वजह से कितनी बेटियाँ घरों में बैठी रह गईं, और कितने माँ-बाप ने अपनी इज़्ज़त तक दाँव पर लगा दी।”

दहेज में रियाकारी है, और लोगों को खुश करने की कोशिश जबकि अल्लाह का हुक्म यह है कि हक़ अल्लाह के लिए हो, न कि मख़लूक़ के लिए।

विरासत की बरकतें

विरासत का असल मक़सद **इंसाफ़** है। हर रिश्तेदार को उसका मुकम्मल हिस्सा मिल जाता है। इसमें किसी का एहसान नहीं, यह अल्लाह का तय किया हुआ हिस्सा है।

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते थे: “जहाँ शरीअत का हुक्म चलता है, वहाँ बरकत उतरती है। और जहाँ इंसान अपनी रस्में चलाए, वहाँ महरूमी और बदबख़्ती होती है।”

विरासत में: बेटी को उसका हिस्सा मिलता है, बहन का हक़ महफ़ूज़ रहता है, औरत इज़्ज़त वाली बनती है, खानदान में मुहब्बत बढ़ती है दिल साफ़ रहते हैं, रिज़्क में वुसअत आती है।

दहेज ज़लील बनाता है, विरासत इज़्ज़त देती है

दहेज कुछ बर्तनों और सामान का नाम है— इनसे न इज़्ज़त बढ़ती है, न सुकून मिलता है। और अगर औरत पर ज़ुल्म हो जाए तो यह उसके किसी काम नहीं आता।

लेकिन **विरासत** औरत को असली माल देती है, जो उसकी हिफाज़त, इज़्ज़त और मज़बूती का सहारा बनता है।

अकाबिर फ़रमाते थे: “जो चीज़ अल्लाह दे वह नेमत है, और जो चीज़ लोग दिल दुखाकर लें वह वबाल है।”

दहेज लड़कियों को मुहताज कर देता है, और घरों को कर्जदार बना देता है। लेकिन **विरासत औरत को मालदार और मज़बूत बनाती है**, और उसे जिंदगी के उतार–चढ़ाव में सहारा देती है।

खानदान की सुधार विरासत से होती है जब घर में इंसाफ़ होता है तो मुहब्बत बढ़ती है। रिश्ते मजबूत होते हैं। एतबार बढ़ता है। लेकिन जब रिश्ता दहेज पर बनाया जाए, तो शुरुआत ही गलत बुनियाद पर होती है।

अकाबिर कहते थे: “जहाँ दीन की जगह रस्में हों, वहाँ घर आबाद नहीं होते।” विरासत खानदान में मुहब्बत, इंसाफ़ और सुकून पैदा करती है, और दहेज हसद, तकब्बुर और बदगुमानी पैदा करता है।

आख़िरत का पहलू

विरासत का हक़ रोकने में सख़्त चेतावनी है। हदीस में आता है: “जिसने किसी का हक़ दबाया, क़यामत के दिन सात ज़मीनों का बोझ उठाए आएगा।”

जिसने अपनी बेटी, बहन या माँ का हिस्सा नहीं दिया— वह अल्लाह के हुक्म को पीछे डालने वाला है। और जो अल्लाह के हुक्म के मुताबिक विरासत देता है— वह अल्लाह के नज़दीक कामयाब है। उसके घर में बरकत आती है, औलाद में खैर पैदा होता है।

ख़ुलासा

ऐ मेरे अज़ीज़ भाइयो! दहेज छोड़ दो, और विरासत का निज़ाम ज़िंदा करो। इसी में दीन है, इसी में इज़्ज़त है, इसी में भलाई है, इसी से घर आबाद होते हैं, और इसी में आख़िरत की कामयाबी है।

दहेज न देना कोई गुनाह नहीं है, लेकिन लड़की या बहन की विरासत में से एक पैसा भी रोक लेना बड़ा गुनाह है। क़यामत के दिन इसकी पूछताछ होगी और मज़लूम वारिस का हक़ ज़ालिम की नेकियों में से ले लिया जाएगा।अल्लाह तआला ने विरासत के हिस्से ख़ुद तय किए हैं, इसे किसी क़ाज़ी या मुफ़्ती की मर्ज़ी पर नहीं छोड़ा गया। इसलिए बहनों, बेटियों और छोटे भाइयों का हक़ तुरंत अदा करना ज़रूरी है।किसी वारिस का पूरी विरासत पर क़ब्ज़ा कर के दूसरों को उनके हिस्से से महरूम रखना बहुत बड़ा गुनाह है।

अल्लाह तआला हमें सही अमल की तौफ़ीक़ दे। आमीन।

अकाबिर के कुछ फर्मूदात

“जिस निकाह में दिखावा न हो वही सुन्नत के करीब है।” —
हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी रह.

“शरीअत में वुसअत है, हमने रस्में डालकर उसे तंग कर दिया है।”
हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह.

“जिस निकाह पर गरीब अमल न कर सके, वह निकाह नहीं रस्म है।”
शेख़ुल-हिंद हज़रत मौलाना महमूद हसन रह.

“निकाह इबादत है, और इबादत में दिखावा आ जाए तो बरकत उठ जाती है।” —
हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह.

“बेटी को इज़्ज़त से रुख़सत करो, ज़्यादती से नहीं।” —
हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी रह.

اسلامک انہیرٹنس ریسرچ سینٹر

ابوالفضل انکلیو، جامعہ نگر، اوکھلائی دہلی۔25
رابطہ نمبر: +91-9871481152
connectiirc@gmail.com
iirc.org.in
visit: iirc.org.in
Scan to Live Class

خلاصہ

اے عزیز بھائیو! جہیز چھوڑ دو اور میراث کا نظام زندہ کرو۔ اسی میں دین ہے، اسی میں عزت ہے، اسی میں خیر ہے، اسی سے گھر آباد ہوتے ہیں اور اسی میں آخرت کی کامیابی ہے۔

جہیز نہ دینا گناہ نہیں، لیکن لڑکی یا بہن کی میراث میں سے ایک پیسہ بھی روک لینا بڑا گناہ ہے۔ قیامت کے دن اس کی باز پرس ہوگی اور مظلوم وارث کا حق ظالم کی نیکیوں میں سے لے لیا جائے گا۔ اللہ تعالیٰ نے میراث کے حصے خود مقرر کیے ہیں، کسی قاضی یا مفتی کی مرضی پر نہیں چھوڑے۔ اس لیے بہنوں، بیٹیوں اور چھوٹے بھائیوں کا حق فوراً ادا کرنا لازم ہے۔ کسی وارث کا پوری میراث پر قبضہ کرکے دوسروں کو محروم رکھنا سخت گناہ ہے۔

اللہ تعالیٰ ہمیں صحیح عمل کی توفیق دے۔ آمین!

اکابر کے کچھ فرمودات

جس نکاح میں دکھاوا نہ ہو وہی سنت کے قریب ہے۔
(حضرت مولانا قاسم نانوتویؒ)

شریعت میں وسعت ہے، ہم نے رسوم ڈال کر اسے تنگ کر دیا ہے۔
(حضرت مولانا رشید احمد گنگوہیؒ)

جس نکاح پر غریب عمل نہ کرسکے وہ نکاح نہیں رسم ہے۔
(شیخ الہند حضرت مولانا محمود حسن دیوبندیؒ)

نکاح عبادت ہے اور عبادت میں دکھاوا داخل ہوجائے تو برکت اُٹھ جاتی ہے۔
(حضرت مولانا اشرف علی تھانویؒ)

بیٹی کو عزت سے رخصت کرو، زیادتی سے نہیں۔
(حضرت مولانا حسین احمد مدنیؒ)

تقسیم میراث پر مفت کلاسز

وقت : 9:30 سے 10:30 رات دن : صرف جمعہ
Zoom ID : 923 659 2939 Password : 1234